हसरतें जिसकी हैं, हक़दार नहीं

हसरतें जिसकी हैं, हक़दार नहीं
कैसे कह दें, के गुनहगार नहीं

कोठियाँ जो बना के देता है
एक घर का भी वो हक़दार नहीं

दर्द ताउम्र जिसने झेलें हैं
राहते दिल का तलबग़ार नहीं

आपकी याद लेके न आए
ऐसी कोई भी रुत, बहार नहीं

रात दिन नाम जिसका लेते थे
ज़ाहिर करते थे उससे प्यार नहीं

सबसे जीता है बशर, ख़ुद से मगर हारा है

सबसे जीता है बशर, ख़ुद से मगर हारा है
सब ही कुछ पाने की ख़्वाहिश ने उसे मारा है

ऊँचा रुतबा हो, बहुत पैसा हो, हर इशरत हो
कितनी उम्मीदों का मारा हुआ बेचारा है

कल की दुनिया थी कि जिसमें था सुकूँ ही सब कुछ
आज की दुनिया का कुछ और ही नज़्ज़ारा है

आज कितना भी किसी को मिले, उसको कम है
और कुछ और मिले, सबका यही नारा है

तुमको जिस राह में करना है सफ़र तय बच्चो !
उसके हर गाम पे फैला हुआ उजियारा है

सत्या त्रिपाठी

मत खेलो शब्दों से नाहक

मत खेलो शब्दों से नाहक,
शब्द नहीं कुछ भाव हैं ये
मन में चुभते और डसते से, ढके हुए कुछ घाव हैं ये

चारु चँद्र को देखा है ना
शुभ्र चाँदनी बरस रही
पर मुझको जाने ये लगता मन के बहते स्त्राव हैं ये

खेवनहार नहीं हो यदि
पार नदी के जाएँ कैसे
तट पर देखे अनुबँधों के
बँधे हुए कुछ नाव हैं ये

दूर शहर के काले रस्ते
पगडँडी पतली तक आए
याद आ रहे हमको प्रीतम
अपने ही तो गाँव हैं ये

लौट चलें, अब आ भी जाओ
और कहाँ विश्रांति पाओ
नदी किनारे चँचल लहरें
देखो, हीरक तारों छांव है ये

ISSN:2583-8849